394 P
68
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1539/10/11

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 394

(T)
891.931
Va 1736

गांधी-गौरव

1434
1930
2 copies only
A

लेनिन को देखौ नहिं देखौ सनयात सेन,
गाजिहिं कमाल नहिं आशा अनुमानिये।
उलभे अमानउल्ला मुल्ला हैं मुलुक फैले,
पौरुष परोसिन के कारज न जानिये॥
दीन बल-हीन अस्त्र शस्त्र सों विहीन बन,
अरि की उदारता न बैठ के बखानिये।
देश की दशा औ बल-वीर्य्य अनुकूल 'बली',
कर्म-वीर गांधी जी के कर्म उर आनिये॥

—लाल महाबली सिंह बाघेल

गांधी-गौरव

—:o:—

जिसको

सिद्धि श्री १०८ साम्राज्य महाराजाधिराज श्री बांधवेश
रीवांधिप वंशावतंस श्री महाराज कुमार श्री
लाल नरहरसिंह जू देवात्मज श्री
लाल महाबलीसिंह जी देव
बाघेल ग्राम पनासी परगना
त्योंथर, राज्य रीवां
(मध्य-भारत) ने
रचकर प्रकाशित किया

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR 1931

शुभ सं० १९८६ वि०

प्रथम संस्करण] जनवरी १९३० [मूल्य ।)

891.431
Va173G

प्रकाशकः—
श्री लाल महाबलीसिंहजी बाघेल
पनासी,
पो० त्योंथर,
राज्य रीवां C. I.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 394
Date 9.12.71
GOVT. OF INDIA

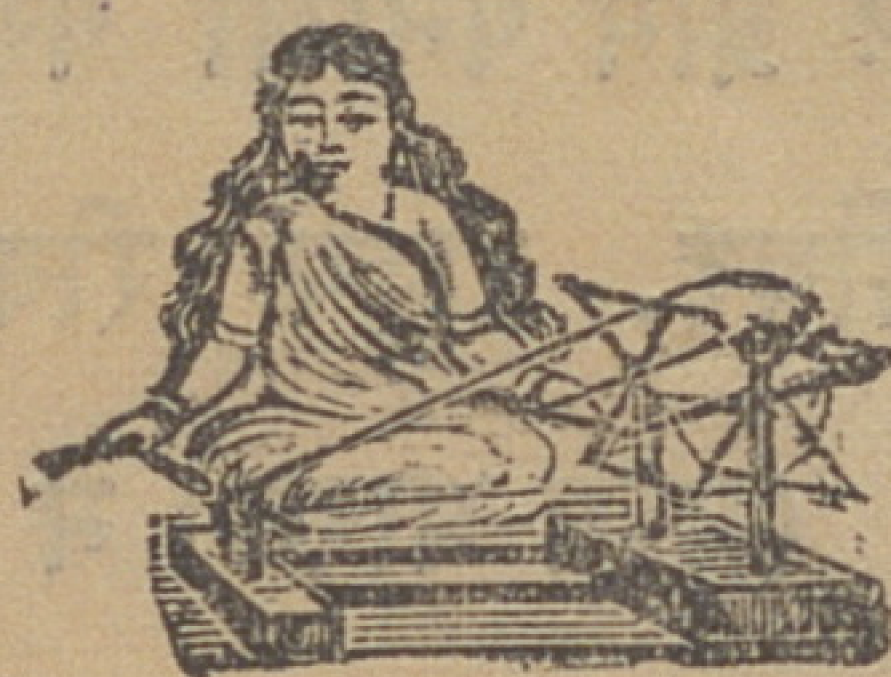

मुद्रकः—
बाबू विशेश्वरनाथ भार्गव,
भार्गव प्रेस,
प्रयाग।

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR 1931

महात्मा मोहनदास कर्मचन्द गांधी

सत्याग्रहाश्रम-साबरमती, अहमदाबाद।

भाषित करत निज रूप ही ते देश रूप
शान्ति ही ते करत अशान्त जौन अरि है।
बढ़ति विशेष जाकी रोके ही ते दून दुति
भारत विपत्त जौन आपुहि ते मरि है॥
विदित 'बली' है विश्व नाम धाम काम जाको
जौन आज सर्व व्याप्त और सर्वोपरि है।
तौन को कहौं हौं कहा परिचै सुनाऊँ जाको
भारत सुमाता धन्य होती अंक भरि है॥

स्टैंडर्ड प्रेस, प्रयाग में छपा।

प्रार्थना।

—:o:—

गांधी हौं न तेरे गुनगान के सुयोग्य 'बली'
कविता की राखौं हौं न नेकहू शकति है।
प्राप्त सतसंगहूँ न काहू देश-भक्तहू को,
नहीं राजनीतिहू में मेरी कछु गति है॥
समय विकट है औ बाधा हैं अनेक खड़ी,
मारग है ऊंचो और सूक्ष्म जुगति है।
तेरे ही एकान्त कृपा आशिष विश्वास बल,
निपट ढिठाई आज करौं यथामति है॥ १॥

तोको अधिकार जैसे कारज सम्पादन को,
मोको अधिकार तैसे वीर-यश गाऊं मैं।
तोको जैसे चाह नहीं आपने सुकीरति की,
मोको तैसे चाह नहीं द्रव्य-धन पाऊं मैं॥
तोको जैसे लगन स्वदेश सदा सेवा करौ,
मोको तैसे लगन सुसेवा दरशाऊं मैं।
गांधी जैसे तोको आत्म-बल को विश्वास 'बली',
ाको विसवास तैसे बल को जगाऊं मैं॥ २॥

झूठो पुल बांधौं हौं न अति-युक्ति ही को करौं,
कहौं तौल कार्य तेरो देख्यों सुन्यों जेतो मैं।
निपट खुशामद ही होतो जौ अभीष्ट मेरो,
सुन्दर शतक जार्ज आज रच देतो मैं॥
मानो हो कि दानो हो कि कुछ भी हो व्यक्ति-गत,
तेरो हौं न दास दास तेरे गुण केतो मैं।
होतो जौ न देश-भक्त भाषत शपथ 'बली',
छोड़ के सुगंध गंधी नाम को न लेतो मैं॥ ३॥

विनीत—

—'बली'

प्रोत्साहन ।

—:o:—

एक गांधी यूनियन सर कीन्हो सरकार,
एक गांधी भृत्य-शाही शासन डिगायो है ।
एक गांधी भारतीय हिम्मत बढ़ायो 'बली',
एक गांधी सर्व-श्रेष्ट नर पद पायो है ॥
एक गांधी पशु-बल दलित कियो है विश्व,
एक गांधी आत्म-बल जग को दिखायो है ।
तैतिस करोड़ बनौ गांधी आज भारत पै,
साइमन सप्तक की लगै नहीं मायो है ॥ १ ॥

क्रान्ति की विमल चाहौ विजय निरापद तौ,
गांधी रचनातमक कारज विचारिये ।
चाहौ सामराज्यवाद नाश हो निमिश में तौ,
गांधी-वाद हो विवाद मुखते उचारिये ॥
साम्यवाद इष्ट हो तौ सत्य सत अन्तह ते,
काम क्रोध मोह मद गांधी सम मारिये ।
भृत्त्यशाही शासन सों मुक्त जौ स्वदेश चाहौ,
गांधी अनुशासन तौ शीस 'बली' धारिये ॥ २ ॥

केते मुल्शा-पेठा सम जीत के लहोगे यश,
केते गुरूबाग केसे अरि को झुकावोगे।
केते गुरुद्वारा सम संघ को सुनैंगे लोग,
केते नागपुर केसे दृश्य को दिखावोगे॥
केते जलियांन वाले बाग सों शहीद होंगे,
केते लखनऊ केते पौरुष जनावोगे।
गांधी को न भूलिहौ हे जौलौं बीर भारतीय,
केती बारदोली सी विजय 'बली' पावोगे॥ ३॥

पनासी-त्योंथर-रीवां
आश्विन शुक्ल १० सं० १९८६
विक्रमीय

निवेदक—
महाबलीसिंह बाघेल

बन्देमातरम् ।

गांधी-गौरव ।

जय गिरिधर गोपाल कृष्ण कंसारि मुरारी ।
जय मंदर-आधार कच्छ नरसिंह खरारी ॥
जय रावण दल दलन खलन सत्त्वर संघरता ।
जय बामन जय बुद्ध पतित मन पावन करता ॥
जय दीनानाथ दयाल प्रभु, 'बली' निबल असरन सरन ।
गांधी महान व्रत धर्म रत, देहु विजय जय जग भरन ॥ १ ॥

बढ़त अमित उत्साह 'बली' आनन्द रहत भरि ।
दवत दुसह दुख दैन्य दीनता जात सकल हरि ॥
सुख स्वराज्य संचरत टरत आतंक असुर खल ।
भ्रम भय सब भजि जात बीरता चढ़त अतुल बल ॥
डगमगत धरा जय जग कहत, पर पच्छुन मन होत हत ।
गांधी अनन्त अनुराग युत, जदिन देश दुख अनुभवत ॥ २ ॥

अन्न जल वस्तु सों भरो है देश दीख गांधी,
सुन्दर सुगंध शुचि बहत वयार है ।
उन्नत उदय अस्त होत रवि शशि नित,
षष्ट ऋतु वर्ष प्रति करत विस्तार है ॥

शोभित अनेक दृश्य वन औ मैदान कूल,
खग मृग जीव जन्तु जातक अपार है।
तैतिस करोड़ प्राणी भारत बसुन्धरा पै,
पावत न मोद 'बली' त्राहि की पुकार है ॥ ३ ॥

देश में मची है लूट, विकट विदेशी आज,
गजनी अब्दाली गोरी देखि देखि लरजैं।
कतल मचो है ऐसो निरदै तमाम आम,
तुग्लक तैमूर जाहि तकि तकि तरजैं ॥
ऐसी है निरंकुश हुकुम भृत्यशाही 'बली',
नादिर नौरंग जाहि लखि लखि अरजैं।
ऐसो गांधी देख्यो अति होत उतपात हाय,
रावण हिरण्य कंस भूलीं घोर गरजैं ॥ ४ ॥

गांधी महाराज परतंत्र दीन देख्यो देश,
उक्ति युक्ति हीन बनो भिक्षुक विचारो है।
पर को अशक्य 'बली' निज को है शक्य बनो,
काहुहिं अछूत काहू अच्युत विचारो है ॥
धर्म में अधर्मता है स्वारथ विशेष बढ़ो,
भृत्यशाही भेदनीति विविध बगारो है।
आपनो विज्ञान विद्या भूल बल बुद्धि सर्व,
भौंचक पाश्चात्य नवरूप को निहारो है ॥ ५ ॥

बरष सहस देखि देश की गुलामी 'बली',
लूट पाट देखि गांधी हृदय दहलिगो।
करत मजूरी रात दिन औ बेगार तऊ,
छुधा की अशान्ति ज्वाला देखत पिघलिगो॥
ऊन कहूँ देख्यो कहुँ रेशम कपास पाटी,
नगन शरीर तऊ देखि चहुँ खलिगो।
दीन को गोहार मार निरखि नृशंसक को,
प्रबल अनीति देखि नीर नैन ढलिगो॥ ६॥

जावत रहेगी देश जोर जठराग्नि ज्वाल,
तावत न भोजन करैगो दरिया दुराय।
जावत रहैगो भेष देश को नगन 'बली',
तावत रहैगो तन धारे लंगुटी लगाय॥
जावत रहैगो क्रूर शासन विदेशी देश,
तावत निवाहिहै स्वदेशी ब्रत को उठाय।
जावत स्वतंत्र गांधी देश को करैगो नहीं,
तावत रहैगो शीस भृत्त्य-शाही को दबाय॥७॥

गांधी महाराज आत्म-बल के प्रताप आज,
भारत स्वराज्य राजिवे को चित लाई है।
त्यागि अपवित्र वस्तु वस्त्रहूँ विदेशी सब,
रोक्यो इसकूली और कालेजी पढ़ाई है॥

कौंसिल को त्यागि धता कोर्ट को बतायो 'बली',
मुलकी सामुंद्री छाड़ि दीन्यो सेवकाई है।
करिकै तयारी कर-बंद की करन चाह्यो,
ऊर्ध्व भृत्य-शाही धुआं अंतिम दिखाई है ॥८॥

तोप तलवार शान्ति खद्दर जिरह-बख्त,
घालत प्रबल अरि परत न वार है।
युद्ध को विधान वैध नान-कोपरेशन को,
वीरता अहिंसा हठ देत अधिकार है॥
कोट किले कैदखानें मोरचे जुलुम जोर,
बेड़ियां सफल वीर सैनिक सिंगार है।
नायक श्री गांधी 'बली' लक्ष है स्वराज्य सिद्धि,
सैन्य देश-भक्त शत्रु भृत्य-सरकार है॥ ९॥

गूंजत गोहार जय गांधी महाराज जी की,
वन्देमातरम ध्वनि मचत अपार है।
खद्दर पोसाक सजी सेना देश-भक्तन की,
मातृ-भूमि हेत माथ करत निसार है॥
जागृति जगत गैल ग्राम औ नगर पुर,
गावत स्वतंत्रता के गान गलभार है।
एक एक अंगन को रहत बनाय गांधी,
परत जहां लों 'बली' गांधी ललकार है॥ १०॥

सोवत निसोच देश बासिन प्रवासिन को,
खोजत अपान बल पौरुष जगाय दीन्हो ।
पारथ प्रताप शिव रामकृष्ण भीष्म भीम,
गोविन्द सन्तान उर भीरुता भगाय दीन्हो ॥
भारत उत्थान हित हिम्मत उत्साह दै दै,
समै शक्ति अनुसार लोगन लगाय दीन्हो ।
गांधी अनखाय डंका युद्ध को बजाय 'बली,
सर सरकार करि गरद मिलाय दीन्हो ॥ ११ ॥

तोपैं चलैं न चलैं बरछी,
न चलैं तुपकैं न चलैं तलवारैं ।
बातैं सक्रुद्ध न काहू कहैं,
न लरैं कहूँ काहू के रक्त निकारैं ॥
प्रेम की धार हिये कर धार,
करैं पर वार अपूरब मारैं ।
गांधी 'बली' ऐसो युद्ध कियो,
मन शुद्ध कियो सरकार की हारैं ॥ १२ ॥

अमृत असहयोग सींचि 'बली' भारत को,
मृतक शरीर अति आतुर जिलाय दीन्हो ।
भिन्न जात पांत धर्म छूत औ अछूत सब,
ढोंग को ढहाय सत्य मार्ग पै मिलाय दीन्हो ॥

पतित दलित दशा ओर देशवासिन के,
चित्त को चलाय दुख दीनता विलाय दीन्हो।
गांधी जी गजब कीन्हो लोकप सों रन लीन्हो,
तोप तलवार हीनो तखत हिलाय दीन्हो॥ १३॥

मारैं न काहू कहूं तऊ मारि कै,
बाजैं न काहू कहूँ तऊ बाजै।
बोलैं अनैसी न काहू कहूँ तऊ,
बोलै अनैसी बनाय अराजै॥
गांधी 'बली' कर है न छड़ी,
छल छन्द न है मन सत्य विराजै।
सादर हारि तऊ सरकार,
करै अनयाय न अन्तर लाजै॥ १४॥

प्रेम रस भीनीं लीनी लाघव लड़ाई बिन,
अस्त्र सस्त्र कीन्हीं 'बली' अकह कहानियां।
बन्द कीन्हो शासन के आसन अवासन को,
घर घर सुखद स्वाराज्य बगरानियां॥
देखि कै अभूत शुद्ध युद्ध को विधान विधि,
बड़े बड़े लाटन की अकिल भुलानियां।
गांधी के गराजे देश दैन्य दुख दूर भाजे,
झांपे सरकार सारी कांपे बरतानियां॥ १५॥

गांधी महाराज तोड़ि सहयोग शासन सों,
कीन्हो है स्वतंत्र देश सुख न अमात है।
घर घर चरखा चलत चर चर बोलैं,
घर घर करघा चलत घहरात है॥
अन्न वस्त्र पूरित भयो है 'बली' घर घर,
काहू की न त्रास रही काहू की न घात है।
देखि कै अभूत बूत सुखमा स्वराज्य सारी,
सोकित हृदय अरि छाती दहरात है॥ १६॥

गांधी महाराज तोड़ि दीनों सहयोग सुनि,
शासक सशंक सब आतुर सरोष भे।
नरम नृशंस भए चुगुल चपल भए,
चाईं चापलूस मिलि लागे देन दोष भे॥
असुर उचकि चौंकि चौंकि कै अचेत भये,
सजग सपन लागे देखन अतोष भे।
कहर लहर उठी लंदन विलायत लों,
खबर कहा है 'बली' पूछें बदहोश भे॥ १७॥

बृटिश साम्राज्य कढ़्यो कोप चहुँघाते घेरि,
सब तर ब्यूरो-क्रेसी गूंजत गोहार है।
तार पर तार दिल्ली लंदन दगन लाग्यो,
एकहूँ न आयो अन्त कछु निरधार है॥

ठट्ट पर ठट्ट जुरी फौज़े फिरगानें फिरें,
अस्त्र शस्त्र धरे पर चलत न कार है ॥
गांधी महाराज 'बली' किम्मत तिहारे आज,
हिम्मत गई है भाज सारे बदकार है ॥ १८ ॥

तुपक वितुंद होत तोप 'बली' बंद होत,
किरिच सांगीन न कै सकत संघात है।
हाथ हथकड़ी गर तौक को तबक बेंड़ी,
पैर में पिन्हाई शोभा भूषण दिखात है॥
फांसी मुक्ति-फंद होत जह्ल महल होत,
लागत अनन्द होत जस उतपात है।
गांधी महाराज तेरे नाम को खयाल होत
खलक हलत व्यूरो-क्रेसी बिललात है ॥ १९ ॥

कलकत्ता मद्रास कुर्ग बम्बई नागपुर,
प्राग दिली लाहौर सिंध सीमान्त पुर्षपुर।
ढाका पटना अदन ब्रह्म अजमेर सुयावत,
राजस्थान विभिन्न स्वदेशी सकल रियासत॥
गांधी प्रताप तुअ व्याप्त चहुँ,
चकित 'बली' सूवान हत।
बैठे सभीत शिमला शिखर,
करत सोच शंका निरत ॥ २० ॥

जहल महल ह्वैगो मोती औ जवाहर को,
दण्ड द्रव्य ह्वैगो दास लाजपतराय को।
समय सुलभ ह्वैगो 'बली' अली भाइन को,
खलक खिलाफत की बातैं बतलाय को॥
वीर देश-भक्तन को हिम्मत हृदय ह्वैगो,
कठिन कलेस सहि शत्रु समुहाय को।
गांधी महाराज तेरे विमल वचन बस,
निबल सबल ह्वैगो सत्य शक्ति पाय को॥२१॥

करत कतल वृथा त्रास धर मार पीट,
जहल प्रवास फांसी बिन अनुवान है।
अधम गुलाम हेरि नीच देश-द्रोहिन को,
कायम करत वृथा अमन अमान है॥
पथिक स्वतन्त्रता के 'बली' वीर प्रानिन को,
जिनके हृदय थान गांधी को महान है।
अन्ध भृत्य-शाही वृथा करत प्रयास उन्हें,
करन विमुख दण्ड दाब के गुमान है॥२२॥

भाषत बनाय जौन संघ को अवैध 'बली',
खोलत प्रशाखा शाखा तौन ग्राम ग्राम को।
बचन निषेध जौन करत सुभाषन को,
कहत सुवादि तौन फिरत तमाम को॥

जपत करत जौन साहित प्रकाशन को,
करत प्रकाश तौन बाटत बेदाम को।
करै भृत्त्यशाही जौन जौन प्रतिबन्ध तौन,
गांधी के हठीले काटि लेवैं विसराम को ॥२३॥

कुरुक करत धन धाम जौ सुधीरन को,
बोलत नीलाम 'बली' कोऊ न दिखाई देत।
पकड़ि अदालत जौ जात लै विचार हेत,
जात सुनो कोऊ नहीं ब्यान औ सफाई देत ॥
मरत उपास करि कैद कष्ट पाय वरु,
ताड़ना के त्रास पै न दीन ह्वै दोहाई देत।
करत अशान्ति उतपात भृत्त्यशाही जैसे,
गांधी के सुभट तैसे शान्ति को सवाई देत ॥२४॥

कोट भये किले भये क्लब भये कैदखाने,
बेड़ियां रहीं न खाना कम्मल अटै सके।
गांधी के सुभट परी भीर यों अदालत में,
न्याय कहा 'बली' जाकी निरखि न कै सके॥
टूट गये डंडे मुर धार तलवार गईं,
निभ गईं गोलियां न वीर पै हटै सके।
लूट सके धन तन अंग अंग कूट सके,
जूट थके जन जन हृदय न नै सके ॥२५॥

एक के दले ते दस सामुहे दिखाई देत,
दस के दले ते दस शतस जुहावते।
एक कीन्हे बन्द दस बन्द होत बन्दीखाने,
दस के ससाने दस सहस समावते॥
एक कीन्हे कत्ल दस कत्ल को तैयार होत,
दस कीन्हे सर शत सहस झुकावते।
हार थकी भृत्त्यशाही दल के दरारे देख,
दिल के करारे 'बली' गांधी के प्रभावते॥२६॥

विकुल स्वजन होत मौन के निमिश एक,
मचत प्रचण्ड पातुमाम की पुकार है।
डगत एकान्त तप तेज सों सकल जग,
मिलत समाज शत्रु सहत न भार है॥
रहत स्वछन्द गति होत भृत्त्यशाही मंद,
बाढ़त दायित्त्व कैद परत अपार है।
लागत द्वैधार समसेर के समान 'बली'
जानै अरिही को उर गांधी जी की मार है॥२७॥

मारै धरै काबू करै कोटि कोटि वीरन को,
आपने प्रभाव को कि करै सुप्रचार है।
पुलिस बनै कि 'बली' अफसर सिपाही फौज,
सिविल संभारै कि वै क्रिमिनल कार है॥

करै लाटगरी गदागरी कि डरायवरी,
बनै नाई धोबी स्वार भंगी कि चमार है।
गांधी के असहयोग भोग है भुलान्यो सब,
परी भृत्त्यशाही भृत्त्य भृत्त्य की पुकार है ॥२८॥

चढ़े थर्डक्लास रेल घूमत पसींजर सों,
टेशन पै टेशन जगाये 'बली' जात हौ।
दबकि रहत दल देखि भृत्त्यशाही तुम्हैं,
मान ते महान देश-द्रोहिन इसात हौ ॥
नजर रहत शत्रु मित्र सब ही की लगी,
कहां आज कैसे और काह बतलात हौ।
गांधी जी तिहारी दौर लखिवे न योग कछू,
सांझ करौ शिमला तौ सावर प्रभात हौ ॥२६॥

घर मार विपति कलंक कैद सह्यो केते,
सह्यो पै न नेकहूं स्वदेश अपमान है।
काले काले कुतसित केतक कानूनन को,
प्रबल विरोध करि काट्यो हठ ठान है ॥
पर दुख क्लेश कष्ट जान्यो निज ही को करि,
मान्यो पर दीनता न हीनता को आन है।
गांधी महाराज 'बली' भाषत प्रताप तेरे,
देश में दिखाई देत आज नई जान है ॥३०॥

जादिन ते गांधी जी अहिंसा उपदेश दै कै,
निषक्रय समर की पद्धति निकारी है।
सत्य के प्रबोध औ असत्य के विरोध 'बली'
जादिन ते धर्‍यो हद्द हठ की छिकारी है॥
जादिन ते असुर सों करि कै असहयोग,
आत्म-अवलम्बन की रचना विचारी है।
ता दिन ते व्यूरो-क्रेसी भारत बसुन्धरा ते,
जान्यो निज आबदाना उठत अगारी है॥३१॥

जा दिन ते भारत में सादगी समुन्नत भै,
ता दिन ते बगरी विलायत बेकारी है।
जा दिन ते भारतीय भाग्य भव जाग्यो 'बली'
ता दिन ते लन्दनीय घूमत भिखारी है॥
जा दिन ते घर घर खद्दर बनत यहां,
ता दिन ते घर घर वहां पै खुवारी है।
जा दिन ते गांधी सिद्ध कीन्हो है स्वराज्य यहां,
ता दिन ते वहां पै असिद्धता सिधारी है॥३२॥

पुलिस प्रगट गुप्त पैदल रिसाला यान,
गोरी काली पल्टन की पल्टन फिरत रही।
काले काले क्रूर न्याय नाम के अगारी 'बली'
डायरी कतल मात नादरी करत रही॥

वृटिश साम्राज्य कोप बाड़व सुज्वाला सम,
लहकि लहकि चहुँ लपट बरत रही।
गांधी महाराज धन्य ऐसे ही समय तेरी,
भारत में बादशाही हुकुम झरत रही ॥३३॥

नींद को नसाय देत भूख को भुलाय देत,
देखत जहां पै गांधी दुखित स्वजन को।
बैरिन बगोरि देत अरि मुख मोरि देत,
दन्त नख तोरि देत महत खलन को॥
बैर को विहाय देत प्रेम को पिलाय 'बली'
साधन जुटाय देत दुष्टन दलन को।
कूर देत चूर करि दुख देत दूर करि,
लाट मजबूर करि पूर देत प्रन को ॥३४॥

भारत प्रभाव बली' मान हित दाबिवे के,
केते अनियायी न्याय रौलट लों कीन्हे रद।
बोथा इसमठ शठ कायर कलंकी कूर,
डायर ओडायर ते केते के उतारे मद॥
डिपुटी मजिसट्रेट पुलिस कमिशनर,
जज्जन को जेर करि लाटन के राखे हद।
बुद्धि बल के अखंड निज प्रण के प्रचंड,
गांधी हठ के अड़ङ्ग केते दाबि राखे बद ॥३५॥

डांडत पकड़ि 'बली' जात लै अदालत में,
भारी भारी दफन ते देत कारागार को।
लूटि लेत धन धाम खींचि लेत तन चाम,
देखत जहां पै जोरे जनता विचार को॥
निपट निरस्त्र शान्त वीर देशभक्त जानि,
कीन्ही है कुगति केती कई एक वार को।
कितहूँ गे आड़े गांधी कितहूँ गे काड़े बोले,
मुख ते न छाड़े कीन्हे छत सरकार को॥३६॥

धन दीन तन दीन मन दीन मान दीन,
दीनों सरवस्व ऐसो दीन पै उदार को।
रहन सहन दीन असन वसन दीन,
'बली' भेष भाव दीन देश के उधार को॥
संग दीन हीन दीन अंग देश-भक्त दीन,
जंग सरकार दीन शासन सुधार को।
धर्म दीन कर्म दीन साधन सुमंत्र दीन,
देत देत दीन गांधी दीन के उवार को॥३७॥

निज कर काती बिनी खादी की लंगोटी राखी,
आछे आछे अम्बर विदेशिन को बारि कै।
काम छांड़ि क्रोध छांड़ि हिंसा मद मोह छांड़ि,
सत्य पै अरूढ़ अरि राख्यो परचारि कै॥

शठन दबाय राख्यो जेल को निवास राख्यो,
राख्यो हठ हद्द करि चरखा संभारि कै।
गांधी महाराज 'बली' कुटिल कौटिल्य राख्यो,
देश राख्यो धर्म राख्यो पापी भेष धारिकै ॥३८॥

नर की बिसात 'बली' विश्व में कहां लौं कहूँ,
स्वरग विबुध कोऊ आयुध न धायो है।
कालिका कृपाण कालभैरौं करवाल रुद्र,
दण्डहिं दुराय दुम गरुड़ दबायो है॥
विष्णु पाय खबर श्री गांधी आनदोलन की,
चकित सुदर्शन को सागर डुबायो है।
इन्द्र बज्र त्याग्यो जम दण्ड को जरायो भोला,
तुरत त्रिशूल फेंकि डमरू बजायो है ॥३९॥

भूत औ पिशाच प्रेत राकस निशाचरन,
भूखे भूतनाथ घेरि रोवत भुकारे हैं।
मुण्ड माल के अभाव भूतनाथ हूँ बेहाल,
भैरों ढिग जाय भोला मांगत उधारे हैं॥
भैरहूँ लजाय 'बली' कालिका सों जाच्यो जाय,
कालिका हूँ कोरे दयो उत्तर करारे हैं।
गांधी महाराज आज सात्वकी समर तेरे,
मिलत न हेरे मुण्ड हरगण हारे हैं ॥४०॥

गांधी महाराज बुद्ध ईसा औ मोहम्मद की,
सारी करतूति एक तुही में दिखात है।
भूतल के भूपति नरेश शाह बादशाह,
देखि देखि कीरति श्री रावरी सिहात है॥
दीन हीन पतित दलित पराधीनन को,
लेत तब नाम दुख दारिद पराात है।
'बली' विश्व पूज्य आप आप के समान आप,
सुर नर असुर न दूसर लखात है॥ ४१ ॥

ज्ञानिन को ज्ञानी धर्म धारिन को धर्मधारी,
केतक जहान अवतार करि ख्याल हो।
संतन को संत सत्यवादिन को सत्यवादी,
सरल सदय सदा दीन-प्रतिपाल हो॥
हठिन को हठी राजनीतिक को नीतिमान,
चिन्त्य को अचिन्त्य चाहि करत कृपाल हो।
विश्व को विदित 'बली' गांधी भूप भारत को,
निन्द्य भृत्त्यशाही पूर काल हो कराल हो ॥४२॥

निश्चय श्री ध्रुव सम हठ प्रह्लाद सम,
सत्त्य हरिचंद सम जानत जहान है।
राजनीति कृष्ण सम लगन सगर सम,
दान कर्ण दया बुद्ध गोतम समान है॥

प्रण परताप सम रन शिवराज सम,
धर्म धर्मराज वीर्य भीषम प्रमान है।
देश-भक्ति गांधी तेरे तिलक समान 'बली',
सहिषणुताई तेरो तेरे ही समान है ॥ ४३ ॥

निकली हकीकत हकीकत नौरंगजेबी,
कृति कछु काल जब गई पुरनाय है।
राना परताप प्रण पूरन प्रवीन जब,
अमर अजीत राज कीन्हो मनसाय है ॥
सिद्ध भो स्वराज शिवराज महाराज जी को,
वीर पेशवान जब रहे पद पाय है।
गांधी कर्मवीर 'बली' सिद्ध करिदेत आप,
लेत जब जौन कार्य हाथ में उठाय है ॥ ४४ ॥

फ्रांस अमरीका रूम रूस आयरसथान,
रोम इसपेन ग्रीस मिसिर इरान में।
साहि शिवराज वीर राना परताप सिंह,
आवत जहां लों निज देशहू को ध्यान में ॥
राम बलराम कृष्ण पारथ परशु भीम,
जावत बदित 'बली' वेदहू पुरान में।
औलों शस्त्रधारी बड़े होत रहे किन्तु बड़े,
गांधी प्रगटे ते शान्तिधारी भे जहान में ॥ ४५ ॥

साधन स्वधर्म कर्म जोस जोम गीत गान,
रहन सहन खान पान भेष गांधी में।
वारता विचार पाठ पूजा परनाम गांधी,
जीवन विश्वास श्वास स्वांस देश गांधी में॥
दीनन गोहार गांधी पूरन प्रतीति गांधी,
प्रीति गांधी नीति गांधी जीति शेष गांधी में।
प्रकृति प्रभाव 'बली' बहत बयार गांधी,
गांधी गांधी गंधि रही कांगरेस गांधी में॥४६॥

काहू के सकोच 'बली' सोच निज स्वारथ के,
सत्य के प्रकाश को न भूलिहुँ छिपायो है।
प्रबल समाज व्यक्ति शासक सभीति प्रीति,
न्याय के सुपक्ष ते न तनिक डिगायो है॥
निज अन्तरातमा के हुकुम समक्ष एक,
हुकुम न हाकिम को नेक चित लायो है।
आत्म-बल के समक्ष विश्व के शस्त्रास्त्र बल,
गांधी महाराज करि निस्फल दिखायो है॥४७॥

स्वत्व की सजीवनी प्रदायनी स्वराज्य की औ,
पूरन स्वतन्त्रता को आनंद प्रगट करै।
दुखित दुरावै दुख दारिद भगावै दूर,
जालिम के जुल्म को तौ जाहिर जहान हरै॥

राजनीति करत सुनीति को अविषकार,
दलित हृदय हठि साहस अभूत भरै।
गांधी जी तिहारी 'बली' मोहनी सुबानी सो तो,
सत्य को समानता को सुन्दर सुमन झरै ॥४८॥

रूप ते कुरूप कहै मोहै 'बली' विश्व देखि,
सृष्टि में न एक तेरी समता को पायो है।
रहत कृशित कहै भट भृत्यशाही पीन,
आत्म-बल आगे तव आय शिर नायो है॥
छोटी कहै डील ऊंचे डायर ओडार डरै,
बोथा इसमठ सबै पीठ दै परायो है।
आछी भांति जाने हम गांधी महाराज तुम्हैं,
हीनन आदर्श हित विधि ने बनायो है॥४६॥

कुल ते कुलीन 'बली' धनिक घराने भयो,
विद्या बुद्धि ज्ञान में हौ काटे पर कान को।
पुत्र पौत्र आदि परिवार हूं अपार सुख,
सम्पति को कमती न कमती है मान को॥
संयम ते नीयम ते धर्म ते हो कर्मवीर,
निष्ठा दिष्टा देते नित निर्बल अजान को।
छांड़ि निज स्वार्थ सर्व त्यागी औ विरागी बने,
आरत निरखि गांधी भारत संतान को ॥५०॥

आतप वर्षात शीत सहत दिगम्बर ह्वै,
करत उपास 'बली' ब्रह्मचर्य धारे हो।
योगी ह्वै यती ह्वै सत्य बात ही उचार करौ,
दीनन विचार करौ जगत पियारे हौ॥
भ्रम है न भय न्याय प्रेम पर पक्ष्ह ते,
पर उपकार हेत फिरौ मारे मारे हौ।
आप को न मोह मोक्ष मोह मोक्ष भारत को,
गांधी जाके स्वारथ पै संरवस्व वारे हौ॥५१॥

सादगी पसंद तुम्हैं लखि कै गरीबी देश,
तन एक लुङ्गी निज काती बुनी राखी है।
हृदय अहिंसा ऐसी तैसी निरभयता कि,
आयो चौथ पन भायो हाथ न वैसाखी है॥
प्रिय यों स्वतन्त्रता के अप्रिय गुलामी के कि,
पास रहौ राखे एक सेवक न साखी है।
तैतिस करोड़ 'बली' वीर हैं तिहारे संघ,
शान्ति के समुंद्र गांधी भाषौ पै न माखीहै॥५२॥

गांधी महाराज तेरी कौन सी बड़ाई करौं,
'बली' जाके हुकुम को ऐसे लोग पकरे।
बड़े लाट रीडिंग ने कीन्ह्यो बहु जोर पै न,
कोऊ दीन्हे कान कोऊ कीन्हे मन कदरे॥

ब्रिटिश साम्राज्य महाराज युवराज खास,
भारत शहर गली आय जब निकरे।
कोऊ न दुकान खोले कोऊ न जलूस जोरे,
कोऊ किये स्वागत न कोऊ कहूँ सकरे ॥५३॥

गांधी जी तिहारी सत्य वीरता बखान करि,
कोऊ कवि कोविंद न पावत है पार को।
मारिश नेटाल फीजी भारत गोहार तेरी,
चीन रूम राखत हैं तेरी मनुहार को॥
रूस आर्यलैंड अमरीका कारा काबुल सों,
आवत संदेश तेरे संग हैं तयार को।
विश्व को विश्वास तेरे विमल बचन एक,
एक ही अजात-शत्रु 'बली' तू संसार को ॥५४॥

इटली के मेजनी कि जर्मनी के विसमार्क,
रूस के श्री पीटर मिकाडो कि जापान के।
लेनिन डीवेलरा कि ट्रोजकी कमाल सेन,
कि हो क्रामवेल 'बली' इगलिशथान के॥
जग्लुल अमान रिजा बोना कि वाशिंगटन,
चानक तिलक शिव राना हिन्दुस्थान के।
सब की कि शक्तिसिरी समिटि विशेष गांधी,
विमल शरीर तेरे मिली आज आन के ॥५५॥

आरिश डीवेलरा की पूरन स्वातंत्र हित,
अन्तिम अरर ऐसी होत धौं न होत धौं।
सोविट औ जर्मनी सो मेल की गरज वीर,
ब्रिटिश बबर ऐसी होत धौं न होत धौं॥
भारत स्वराज्य ब्यूरो-क्रेसी अन्त देइवे को,
हृदय करर ऐसी होत धौं न होत धौं।
गांधी आनदोलन जौ भारत न होत 'बली',
तुरुक तरर ऐसी होत धौं न होत धौं॥ ५६॥

जौन काज कीन्हों राम शारंग के शस्त्रन सों,
कृष्ण चक्र धारि इन्द्र बज्रहिं उठाय के।
पारथ गांडीव भोम गरुई गदा के जोर,
जौन काज कीन्हों नरसिंह नख नाय के॥
जौन काज कीन्हों राना तेग के प्रताप 'बलो',
शिवराज कीन्हो पूर पंजहिं दिखाय के।
तौन ते अधिक रक्तपात के विहीन गांधी,
कीन्हों सतकाज आज चरखा चलाय के॥ ५७॥

भारी विरोग भरी हिय माहिं,
विशोक करे अस नौकर-शाही।
"पूछे 'बली' कोउ बात यहां नहिं,
है घर सात समुन्दर पाही॥

है घर हूं में धरो कछु नाहिं,
भई सब ओर ते घोर तबाही।
गांधी स्वदेश स्वराज्य कियो,
अब जाय मरौं कहं हौं अब गाही" ॥५८॥

फ्रांस को न समर न जर्मनी को युद्ध 'बली',
बोरहुं बखेड़ा नहिं क्रीमियन वार है।
डुपले न टीपू मरहठ्ठन को हठ नहिं,
झांसी की है पालसी न जलियां की मार है॥
गदर न है सन सत्तावन सिपाहिन को,
नहीं राज-द्रोहिन सों नेक सरोकार है।
निपट निरस्त्र साधु गांधी सों संयोग आज,
नाहक बिडरि ब्यूरो-क्रैसी बेकरार है॥ ५९॥

केशरी पंजाब एक बिगड़ि बिदाख्यो अरि,
झाख्यो अभिमान जाकी भूली न सुरति है।
महाराष्ट्र कानन को केशरी, महान एक,
विफड़ि विलायत लौं कीनी सब गति है॥
सर होत होत एक केशरी बंगाल वृद्ध,
भारी करी दाबि 'बली' भृत्यशाही क्षति है।
आज तौ गुजरात सों पसर करत दिल्ली,
सहित समाज कोपि केशरी नृपति है॥६०॥

राष्ट्र को अधिप 'बली' गांधी महाराज बने,
शासन समिति बनी कांग्रेस बनाई है।
गजट बनोई प्रिय हिन्दी-नवजीवन है,
ग्राम ग्राम चौरा न्याय करत सदाई है॥
तिलक विद्यालय हैं शुद्ध विद्यापीठ बने,
घर घर कारखाने चरखा समाई है।
साबरमती तट को सत्याग्रह आसरम,
यमुना तट दिल्ली की महिमा गमाई है॥६१॥

एक ही अवाज वीर 'बली' अली भाइन की,
सारी भृत्य-शाही एक साथ ही सनक गई।
दिल्ली औ विलायत में अहन खहन परयो,
मानो कठघर कढ़ि सिंह ने झपट दई॥
केतक बटैरि फौज फक्कड़ फेहाने पैन,
नेरे नियराने हत हिम्मत हृदय भई।
त्राहि दीन रीडिंग यों करत विनय "गांधी,
तेरे मेमनान मेरी हुर्मत सकल लई"॥ ६२॥

मद से मतंग वहां प्रेम सुधा-मस्त यहां,
मांस को अहार वहां यहां सब्र पूर है।
क्षुद्र पशु-बल वहां आत्म 'बली' बल यहां,
क्रोध घृणा वहां यहां क्षमा भरपूर है॥

कोरे पद-शूर वहां अंत सिद्ध संत यहां,
कहत दिगन्त जिन्हे एक मुख शूर है।
कर्म-वीर गांधी यहां भीरु भृत्यशाही वहां,
क्रूरताई चूर याते होत मजबूर है ॥ ६३ ॥

बाची अस्पृश्यता है वस्तु में बिदेशी बस,
फूट बाची भृत्त्यशाही केवल लिलार में।
कौंसिल में कसपर्सी कोर्ट में अनीति बाची,
हिंसा बाचो रमि एक कातिल के नार में ॥
डाके बाचे पुलिस में गदर सदर फौज,
भय बाच्यो जाय देश-द्रोहिन के द्वार में।
विजय विराज बाचो 'बली' गांधी जी में एक,
राज रही जाकी मूर्ति मानव संसार में ॥ ६४ ॥

गोरन सों काले अब कहि नहिं साले जात,
नहीं बूट-घात तिल्ली फूटत अजान है।
दूर ही रहत झुक करत सलाम नहिं,
साहेब हजूर कहि सूखत जवान है ॥
जुगल न जोरे कर परत नजर ओरे,
लखत इशारा नहिं जात उड़ि प्रान है।
गांधी महाराज 'बली' भाषत प्रताप तेरे,
आज जग नेरे मान भारत समान है ॥ ६५ ॥

फिर सों फिरंगिन को गरब गिरन लाग्यो,
हिन्दुस्थान हिरदय हिम्मत बढ़ै लगी।
फेर लाग्यो होन देश कारज विचार 'बली',
फिरसों स्वराज्य पाठ जनता पढ़ै लगी॥
फेर चक्की चरखा को आदर बढ़न लाग्यो,
फेर वस्तु देशी कहं कीमत चढ़ै लगी।
फेर भय होन लाग्यो दूर जेल फांसी कर,
गांधी सों स्वतंत्रता की सुगंध कढ़ै लगी॥६६॥

कोट पतलूम बूट कालर कमीज हैट,
पहिर फिरत रूप बंदर बनाय के।
पियत सिगार बात बोलत सिटिर पिट्ट,
नासत स्वधर्म अनभक्ष वस्तु खाय के॥
करत किलर्की पेट पालत जिहालत से,
मानत न माख काले कुलिन कहाय के।
गांधी जौ न होत 'बली' बनत गरीब सब,
रहत अमीर ईसा मूसा अपनाय के॥ ६७॥

रावण समान व्यूरो-क्रसी अनधेर 'बली',
भारत बसुन्धरा पै मनकी मचावतो।
रौलट समान काले कुत्सित कानूनन सों,
भला कौन आपनोई इज्जत बचावतो॥

डायर ओडायर सों असुर हुकुम पाय,
केते क्रूरता के करतव्य दिखलावतो।
गांधी जौ न होत अन्त सम्पति समेटि सब,
एक एक हेरि हरवाही करवाव तो ॥ ६८ ॥

बहुत करत इसपीच फटकार एक,
'बली' एक प्रसताव देत कर पास है।
बहुत करत डिपुटेशन सजाय एक,
साहब गवर्नर सों मिलत अवास है॥
बहुत करत लेख लिखत सुपत्रन में,
लंदन बहुत जाय करत प्रकास है।
गांधी जौ न होत देश देखत न आत्म-बल,
मरत वृथाहीं व्यूरो-क्रेसी विसवास है ॥ ६९ ॥

बहुत करत बात कहत विचार खूब,
अज खुद पोछू 'बली' आप सब लावेंगे।
बहुत करत वादा भरत कमीशन को,
प्रथम भेजाय जांच पूरी करवावेंगे॥
बहुत करत नाम मात्र अधिकार दैके,
क्रमशह कहत उदारता दिखावेंगे।
गांधी जौ न होत व्यूरो-क्रेसी अनुमान यह,
भोले भारतीय सदा झांसे तर आवेंगे ॥ ७० ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 394
9-12-71
GOVT. OF INDIA

काहू राय काहू राव राजा की उपाधि दैकै,
काहू द्वय अच्छर के पुच्छर लगाय देत।
काहू लाटगरी काहू मेम्बरी मिनिष्टरी औ,
काहू आनरेरी मजरेटी दिलवाय देत॥
काहू चार डब्बल की लालच दिखाय 'बली',
देश हित कारज ते हिम्मत डिगाय देत।
गांधी जौ न होत ब्यूरो क्रेसी छल छन्द छाय,
भारत ते देश-भक्ति भाव को भगाय देत॥७१॥

काहू डाट काहू त्रास चेतना डपट काहू,
काहू के ज़बान ताला कुञ्जी लगवाय देत।
काहू सों मोचलका औ काहू सों जमानत लै,
काहू शान्ति नाम कैद नजर कराय देत॥
काहू कारावास काहू दरियाय शोर काहू,
जन्मदण्ड भोग काहू फांसी लटकाय देत।
गांधी जौन होत ब्यूरो-क्रेसी दबकाय 'बली',
भारत में देश-कार्य बन्द करवाय देत॥ ७२॥

कोट किले ढाय खाईं खामा को पटाय 'बली',
मोरचे तोड़ाय तोपैं दरेन दवायो है।
अस्त्र शस्त्र आइन की रचना दिखाय छुद्र,
छूरी छड़ी चाकू तक हाथ ते छिनायो है॥

भारी विष-फोटक की बात को विचार कौन,
मैन्सिल पोटाश पै तौ लैसस लगायो है।
गांधी जौ न होत वीर भारत को भृत्यशाही,
प्रति प्रतिबन्ध ते नपुंसुक बनायो है॥ ७३॥

पावक दहत तृण पावत जहां लों हेरि,
पावक विलोकि 'बली' वारिद विदारहीं॥
वारिद पै मारुत मरुतहूँ पै भूधर हैं,
भूधर कौ भूकप प्रकम्पि कै पछारहीं॥
भूकप कौ त्रास एक ज्वालामुखी वृन्दन सों,
ज्वालामुखी त्रास सदा प्रकृत विचारहीं।
प्रकृत कियो है भीत भृत्त्यशाही भारत पै,
भृत्त्यशाही विभव श्री गांधी जी विगारहीं॥७४॥

लाटनी कहति पिय जाहु मति भारत को,
गांधी दरबन छांड़ि दिल्ली जाय गरजा।
नादरी निदरि गई डायरी डहरि गई,
शासन सिथिल भयो टूटि गयो दरजा॥
फूट 'बली' फूट गई कायरी निकरि गई,
आलस उघरि गई चेत गई परजा।
करत स्वराज्य सब लोग हैं सुखेन वहाँ,
आपको न काम अब मानो मेरो बरजा॥ ७५॥

गांधी महाराज सुन युद्ध को संदेश तेरे,
स्वारथ की मारी अरि नारी बिललाती हैं।
भारत उत्त्कर्ष देख देख अनखातीं जौन,
तेई अब रात रहें सोती अनखाती हैं॥
पतिन सुसंग 'बली' फिटन डुलातीं जौन,
तेई अब भूल कहूं फिट न डुलाती हैं।
राजनीतिवानी बन शासन समातीं जौन,
तेई अब त्रासन सों सांस न समाती हैं॥ ७६ ॥

रूप बुद्धि योवन स्वातंत्र के घमंड 'बली'
भय उपजातीं ते वै भय उपजाती हैं।
सुन्दर सुवस्त्रन सों अंग प्रति अंग साजि,
कुलिन कहातीं ते वै कुलिन कहाती हैं॥
भारत के नाम सदा लोढ़ा ढनगातीं ते वै,
लंदन गुदाम जाय लोढ़ा ढनगाती हैं।
अरिनी न गात निज गिरजा छिपातीं ते वै,
गांधी की गरज आज गिर जा छिपाती हैं॥७७॥

गांधी जी तिहारे 'बली' त्रास के सकोच आज,
घूमैं अरिसुत बिन रोजी रोजगार के।
टूट गई लूट छूट सर्विस सिविल गई,
फौज में न मौज बिन डायर ओडार के॥

गरिमा गरूर नहीं नायबी नवाबी हू ं में,
पुलिस न धांक बिन रौलट के धार के।
लंदन लिवर मैनचेस्टर के कारखाने,
खंडर खहाने बिन गाहक बजार के॥ ७८॥

सेवा सों स्वदेश भव सत्त्य सों स्वबस कीन्हों,
चरखा चलाय देश दारिद दुरायो है।
छांड़ि क्रोध हिंसा तन मन बच कर्म काय,
सहि क्लेश कष्ट अरि हठ सों हटायो है॥
क्षमा सों प्रतीत जीत लीन्हों पर धर्मिन की,
अन्त्यज को अन्तह सप्रेम अपनायो है।
आशा उतसाह भरि प्रबल हृदय 'बली',
गांधी महाराज नव जीवन जगायो है॥ ७९॥

दक्षिण हब्साने जाय कुलिन कुलीन कीन्हों,
तोड़्यो यूनियन मद प्रण के प्रताप ते।
दुखित किसानन के कठिन कलेस काट्यो,
काढ्यो चम्पारन को निल्हन के चाप ते॥
खेड़ा की खबर करि टार्यो है बखेड़ा सब,
राख्यो देश दूर दुष्ट रौलट संताप ते।
गांधी महाराज 'बली' भाषत सुकर्म तेरे,
भारत स्वराज्य चलि आयो आज आप ते॥८०॥

करत न जेब तनजेब आज अंगन पै,
मची क्रान्ति क्रान्ति धूम धर्म औ समाज है ।
शासित दियो है कंध उफंदि कुशासन सों,
विवश हृदय भयो भावित स्वराज है ॥
पद्धति विमल ऐसी सत्वर विदित भई,
आत्म-बल कीन्ह्यो पशु-बल को पराज है ।
बौरो 'बली' गांधी ऐसो तेरोही बला सों कौन,
ऐतेहू पै तोको कहै—'नाहीं कृतकार्य है' ॥८१॥

कतल कियो औ बन्द कीन्हों कैदखाने केते,
लीन्हो लूटि सम्पति कि केतक हजार को ।
रोकि दीन्हों वेतन बचन बात केतक की,
केतक को दीन्हों भेजि सामुद के पार को ॥
कहा लों गिनाऊं 'बली' कुगति अगति केती,
कसर न राखी जा लों जोर सरकार को ।
आखिर महातमा को पकड़ि विदित कीन्हों,
भारत बसुन्धरा पै गांधी अधिकार को ॥८२॥

होवै नहिं चोरी चोरा क्रोध को आभास 'बली',
होवै नहिं नीमन में फूटत कपास है ।
होवै कर्म-वीरता पै बात वीरताई नहिं,
होवै एक निज करामात की ही आस है ॥

होवै न अभाव जेहिं भाषित संघर्ष काहू,
होवै आत्म-शुद्धि पर देश न उदास है।
लीन्हों तेहिं त्रुटि भ्रम सब के निवारण को,
गांधी आप खास कारावास को निवास है ॥८३॥

जेहल एवरदा में जा दिन ते गांधी गयो,
ता दिन ते भयो वह तीरथ प्रयाग है।
जर्मनी जापान चीन फ्रांस रूम रूस आदि,
देसन विदेशन सों आवत विराग है॥
गंगा और यमुना के संगम समान तहां,
आनंद वियोग संग बहत निदाग है।
सर्व-श्रेष्ट एक 'बली' समता विचित्र यह,
गांधी सरस्वती सम दर्शन मुदाग है ॥८४॥

लम्पट न होहु मानौ नारिन को माता सम,
चोरहुँ न होहु पर स्वारथ के सारथी।
कातिल न होहु कहौ बात न कठिन काहू,
कीन्हे बरजोरी नहीं परम प्रमारथी॥
करत कुन्याव नहीं शस्त्र न उठाये 'बली',
कसर कसूर नहीं निपट यथारथी॥
दानव दलन दुख देश के दुराइवे को,
दांदी अपराधी बनौ गांधी जी महारथी ॥८५॥

ब्रिटिश साम्राज्य सर्प हाथ ते खेलायो गांधी,
चतुर मदारी हौ न लायो भय जान की।
दूजो हौ कन्हैया राष्ट्र भारतीय मंडल को,
नाच्यो तकथेई तेज धार पै कृपान की॥
पौरुष प्रकट शुद्ध सात्वकी कियो है भव,
शीस सों प्रत्यञ्चा काट्यो अरि के कमान की।
कीन्ह्यो बलि आत्म 'बली' वेदी पै स्वतन्त्रता की,
शोणित दियो है भरि फेर घट जानकी॥८६॥

सुरन जमात जोड़ि सुमन निपात करें,
पितर अनन्द आज भरत गगन हैं।
साधु साधु चारों दिशि कहत लहत चैन,
करत गुनानवाद जग जन जन हैं॥
धरणि अभार पाप भार सों उसास पाय,
आशिष फड़ींश देत सहस मुखन हैं।
वदत तिहारों वर गांधी जी विरद 'बली',
भारतीय जय जय भाषत मगन हैं॥८७॥

खल दासता के पलने में पले,
जिय ज्वाल सदा जठराग्नि जले।
रहे फूट को पाठ पढ़ेई भले,
बहु कष्ट रहे द्दग देखि झले॥

कछु भीरुता छोभ विभिन्नता सो,
लखि क्रोधहिं भाव स्वभाव छले।
नहिं गांधी हृदै तुम लावौ उन्है,
'बली' आपनो जानि लगावौ गले॥ ८८॥

शुभ आशा हमारी तुम्हीं से बंधी,
शुभ मारग यों हो दिखाते रहो।
प्रिय देश के पांव पखारन को,
नित नूतन युक्ति सिखाते रहो॥
'हम निर्बल हीन अजान नहीं',
हमें शक्ति हमारी लखाते रहो।
प्रभु गांधी हमारे वै दोष 'बली',
निज प्राश्चित पुण्य पचाते रहो॥ ८९॥

इन क्लेश की रन मिले हौ भले,
प्रिय विद्युत जोति जगाये रहौ।
जननी की गिरी या दशा में तनौ,
करि शीश तौ ऊंचो उठाये रहौ॥
जुग जीवो 'बली' शत कोटि प्रभो,
मृदु मोहन वंशी बजाये रहौ।
मथुरा में रहौ कि रहौ ब्रज में,
बने द्वारिकै देश कौ ध्याये रहौ॥ ९०॥

जावत रहैंगे नभ सूर्य चन्द्र जोतिमान,
तावत रहैगो भव थापित महान है।
जावत रहैगो भव लीन्हे असतित्व निज,
तावत रहैगी सृष्टि सृजि विद्यमान है॥
जावत रहैगी सृष्टि नर पुंगवान युत,
तावत रहैगो शुद्ध साहित जहान है।
जावत रहैगो शुद्ध साहित जहान 'बली',
तावत रहैगो गांधी गौरव को गान है॥९१॥

जावत रहैगो गांधी गौरव को गान 'बली',
तावत निबल कोऊ जायंगे सुने न कान।
तावत न वित्त स्वत्व काहू को हरैगो कोऊ,
तावत स्वतन्त्रता को होयगो न अपमान॥
तावत न राग द्वेष फैलैगो समाज बीच,
तावत न प्रश्न काहू ह्वै है आपनो परान।
तावत न भ्रम भय हृदय समैहै काहू,
प्रेम को प्रतीति को सुनीति को बढ़ैगो मान॥९२॥

॥ इति शुभमस्तु ॥

सूचना

—०—

१—'समालोचना' एवं सम्मति सम्बन्धी पत्र श्रीयुत लाल महाबलीसिंह जी बाघेल ग्राम पनासी पोस्ट त्योंथर, राज्य रीवां के पते से भेजने की कृपा कीजिये।

२—'गांधी-गौरव' पुस्तक ऊपर लिखित पते पर प्रकाशक को लिखने से मिलेगी और मैनेजर, अग्रवाल टाइप फौण्डरी ८३, पानदरीबा प्रयाग से भी मिल सकती है।

३—पुस्तक-विक्रेता तथा थोक खरीददारों को २०) रु० सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। प्रथम आवृति में पुस्तकें बहुत कम छपी हैं अतः ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिए नहीं तो दूसरे संसकरण तक रुकना पड़ेगा।

—प्रकाशक।